HISTORY, B.A. Hons II - PAPER II

NAPOLEON THIRD (नेपोलियन तृतीय)

सन् 1848 ई० की फ्रांस की तृतीय क्रांति लुई फिलिप के सिंहासन-मुक्त होने का कारण बनी। लुई फिलिप के पतन के पश्चात् क्रांति के प्रमुख नेताओं ने फ्रांस में एक अस्थायी सरकार (Provisional Govt.) की स्थापना की। इस अस्थायी सरकार में प्रजातंत्रवादी, समाजवादी एवं श्रमजीवी नेता शामिल थे, किन्तु प्रमुखता गणतंत्रवादियों की थी।

असेम्बली द्वारा निर्मित नवीन संविधान में एक संसदीय व्यवस्थापिका सभा तथा एक राष्ट्रपति की व्यवस्था सार्वाधिकार के आधार पर प्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा निर्वाचित होने की व्यवस्था की गई। व्यवस्था के अनुरूप 10 दिसम्बर, 1848 ई० को सम्पन्न हुए राष्ट्रपति के निर्वाचन में कुल 5 उम्मीदवारों में कैवेग्नेक और लुई नेपोलियन दो प्रमुख उम्मीदवार थे। जनतंत्रवादी कैवेग्नेक की अपेक्षा 'नेपोलियन महान' का महान् भतीजा लुई नेपोलियन (नेपोलियन तृतीय) 54,34,227 मत प्राप्त कर निर्वाचित घोषित हुआ।

नेपोलियन तृतीय का जन्म 1808 ई. में पेरिस में हुआ था। नेपोलियन III ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् स्विट्जरलैण्ड, इंगलैण्ड आदि देशों का भ्रमण कर वहाँ की राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन किया। नेपोलियन महान के पतन के पश्चात् 'बोनापार्ट दल' के प्रतिनिधि और नेता के रूप में वह फ्रांस में अपने चाचा की भाँति साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। विभिन्न राजनीतिक दल अपनी अक्षमता के कारण राजनीतिक दृष्टि से अस्त-व्यस्त फ्रांस को एक व्यवस्था नहीं प्रदान कर सके थे, जिसकी उसे आवश्यकता थी। अतः नेपोलियन महान् की भाँति उसने फ्रांस की राजनीतिक परिस्थिति सुव्यवस्थित करने हेतु अपने सम्मुख चार उद्देश्य रखे - (i) क्रांति के सिद्धांतों की रक्षा, (ii) राष्ट्रीयता के सिद्धांत की रक्षा, (iii) शान्ति की स्थापना, (iv) धर्म की स्थापना।

नेपोलियन तृतीय की गृह-नीति

नेपोलियन III द्वारा जिस एकतन्त्रीय नवीन संविधान का गठन किया गया था, उससे स्पष्ट था कि वह फ्रांस की जनता की राजनीतिक स्वतंत्रता का दमन करना चाहता था। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि उसकी दृष्टि में फ्रांस की जनता सुख, समृद्धि, स्वच्छ प्रशासन एवं सुव्यवस्था की पक्षधर थी, न कि राजनीतिक स्वतंत्रता की। अतः उसकी गृह नीति इसी दृष्टिकोण पर आधारित थी। संक्षेप में उसकी गृह नीति को निम्नवत् उल्लेखित किया जा सकता है:-

(1) कठोर प्रशासन एवं सुव्यवस्था:- निरंकुश प्रशासन की स्थापना कर नेपोलियन ने राज्य की सम्पूर्ण शक्ति अपने हाथों में केन्द्रित कर ली। समाजवादियों का दमन, प्रेस एवं समाचार पत्रों पर प्रतिबंध तथा विरोधियों को जेल की सजा अथवा देश से निर्वासन करने जैसे कठोर प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ उसने उदारपंथियों तथा प्रतिक्रियावादियों के प्रति उदार दृष्टिकोण का

Ajanta Products Officer

→

परिचय देते हुए सार्वलौकिक मताधिकार प्रदान कर दरबार की शान-शौकत की ओर आकर्षित किया। सन् 1860 ई. में उसने यह कदम इसलिए उठाया क्योंकि उसके विरोधियों की संख्या बढ़ गई थी। 1860 ई. में ही विरोधियों को संतुष्ट करने के लिए उसने संविधान में परिवर्तन किये। संविधान में हुए परिवर्तन से व्यवस्थापिका सभा एवं सीनेट को सरकारी नीति की आलोचना का अधिकार प्राप्त हो गया। सभा की कार्यवाही का प्रकाशन होने लगा। इतना होने पर भी निरन्तर विरोध की प्रबलता के फलस्वरूप 1863 ई. के चुनावों में विरोधी प्रबल बहुमत से विजयी हुए।

(2) <u>आर्थिक सुधार</u> :- मध्यम वर्ग के हित को ध्यान में रखते हुए नेपोलियन III ने आर्थिक क्षेत्र में अधिक उदार नीति का प्रयोग किया। व्यवसाय को प्रोत्साहन देने के लिए उसने सरकारी नियंत्रण समाप्त कर दिया। सैन्ट साइमन के आर्थिक उदारवाद से प्रभावित नेपोलियन III ने कारखानों को सहायता प्रदान की एवं बचत बैंकों की स्थापना की। सैन्ट साइमन के अनुसार, "जन साधारण की भौतिक समृद्धि के लिए आर्थिक साधनों, यातायात एवं परिवहन तथा शिक्षा का विकास करना सम्राट का कर्तव्य था।" आर्थिक विकास हेतु नेपोलियन ने उन्हीं सिद्धांतों का अनुसरण किया। उसका प्रधान उद्देश्य इंग्लैण्ड के सदृश्य फ्रांस का औद्योगिक विकास करना था। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसने निम्नलिखित कार्य किये -

(i) <u>बैंकों की स्थापना</u> :- औद्योगिक विकास हेतु साख (Credit) की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए 1852 ई. में उद्योगों को पूंजी सुलभ कराने के उद्देश्य से पेरियर बन्धुओं ने क्रेडिट मोबिलियर नामक बड़े बैंक की स्थापना की। क्रेडिट फांसियर नामक दूसरे बैंक की स्थापना तथा 'बैंक ऑफ फ्रांस' के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि करके उसे भी ऋण देने का अधिकार दिया गया। इस प्रकार बैंकों की स्थापना से औद्योगिक विकास के मार्ग प्रशस्त हुए।

(ii) <u>मजदूरों की सुविधाओं की व्यवस्था</u> :- औद्योगिक विकास के परिणाम स्वरूप श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हुई। गणतंत्रवादियों एवं समाजवादियों पर अपने प्रभुत्व की स्थापना करने हेतु नेपोलियन III ने श्रमिक वर्ग को प्रसन्न रखने के लिए अच्छे एवं सस्ते आवास एवं बीमा योजना लागू की। सन् 1863 ई. एवं 1864 ई. के कानूनों के प्रावधानों के अनुसार मजदूरों को क्रमशः अपने संघ का निर्माण एवं हड़ताल करने का अधिकार भी प्राप्त था। श्रमिकों की कार्यावधि में कमी तथा अवकाश में वृद्धि करके उन्हें अधिक सुविधाएँ प्रदान की गई।

→

(iii) कृषि की उन्नति हेतु कार्य :- नेपोलियन III ने कृषि विकास की ओर पर्याप्त ध्यान दिया। रेलों के विस्तार से कृषक अपने उत्पादों को स्थानान्तरित करके अधिक मूल्य अर्जित करते थे। उत्पादन में वृद्धि हेतु कृषि सोसायटियों का गठन, कृषि शिक्षा हेतु कृषि विद्यालय, अच्छे उत्पादन हेतु पारितोषिक की व्यवस्था की गई। इस प्रकार के कार्यों से कृषि उत्पादन एवं कृषकों की स्थिति में पर्याप्त सुधार आया।

(iv) लोक निर्माण के कार्य :- नेपोलियन III ने सड़कों, नहरों एवं पुलों के निर्माण के अतिरिक्त पेरिस, अल्सेस तथा लोरेन, आदि नगरों में सुन्दर एवं विशाल इमारतों का निर्माण करवाया। बैरन हासमैन के निर्देशन में पेरिस की सड़कें चौड़ी करवायी गई। नगर में अनेक बाग लगवाये गये। पेरिस की सुन्दरता एवं आकर्षण के कारण द्वितीय साम्राज्य की राजधानी यूरोपीय देशों के लिए प्रतीक बन गई।

(B) धार्मिक नीति :- नेपोलियन ने कैथोलिक धर्म को, कट्टर धर्मानुयायी होने के कारण नहीं अपितु राजनीतिक कारणों से प्रमुखता दी एवं चर्च का संरक्षक बना। फ्रांस में कैथोलिक दल के अधिक शक्तिशाली होने के कारण अपनी स्थिति सुदृढ़ करने हेतु इस दल को सुदृढ़ करना परमावश्यक था। फ्रांस की अधिकांश शिक्षा के केन्द्र कैथोलिक स्कूल ही थे। विश्वविद्यालयों एवं सार्वजनिक विद्यालयों में पादरियों के प्रभाव में वृद्धि के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। यही नहीं, कैथोलिक पादरियों के प्रश्न को लेकर उसने क्रीमिया के युद्ध में भी भाग लिया।

28.9.2020